

ॐ नमः श्री गुरु सत्वाय ॥ ॐ नमः श्री गुरु नृत्ये ॥
 आगरु च व मातृ मप ॥ अष्टांगार्चन कनक मणि मय नाना नत्वा
 प्रकालिना २ चरु च दीप संगम मधु मधु मा म श्री गुरु सत्वाय नृविजयि या २
 सुम नृकांचन मशिकि यन सय जा हास्क च सुम विजा जिना २ श्री गुरु हास्क
 च सह ॥ नाथ जल मशु ल निर्या ग या मि २ पु प म न च श्री गुरु मशु ल अवि का
 च च थ क मल सिल धा यिया २ यका च जान पूर्व वि द हा यका च जान आम्हा दीप २ य
 प च गा अवधि वं उ रु च क च व वि वि वि च त्र संपु २ या उप दीप चा उप दी

अष्टांगार्चन

द्विप

प. लाउप द्योप. बाउप द्योप. गजचक्रना. प्रवचनना. अथचक्रना. शोचनना. ख
अचक्रना. मशोचनना. चक्रचक्रना. वासविनिधानसमर्थ ॥
चागपमेजलि ॥ नालमा ० ॥ अनीलअनलजलजोरुनेमा मः भवमथलवक्रवा
या २ वक्रपंजले ठालजालसयलाः पयिरुदिहववजाया २ उमाचक्रवयीया ॥
॥ ॥ ॥ अथकवृथा आलिंगगथ हववजयिया वक्रवाजाही आलिंगगथसेवच
क्रयिया २ क्रुडिसंबीच बीचध्वज ऊहि २ नहि २ अष्ट ॥ ॥ अनेहनसवेदव
वक्रपाउ अदिगमचक्रिवयचसंराव ॥ छिडुवनकुसुमं कृतायहरादा ॥ छिडुव

श्री

तुक्र

ननुकवीचा २ छिडुवननवननाट अथचक्रनादः कलिंगवागकाकाया ॥ अहिनी ३
थीसहुच वीलेहुचाग आदिगवा खवअलाव २ अचामचक्रवयवधनेन मा
चनलयमाचगगनसंराव उमाचक्रवयीया ॥ ॥ ॥
चागलववी ॥ नालइजमोन ॥ कल अचनविधि पंचापहाजा पूजयामिरुदव
गथा २ विविधिउपहावन लगीनवचउमच यथा धनिसुमंगला ॥ उं वज्रामका
दकमन्दाकिनीसमरावक अदयचपं ॥ ॥ ग. अ. अ. सुवलि श्री लक्ष्मी महाका

कल

ल उं स प्रो निष्ठि न व कु स्वा हा ॥ ॐ ॥ कनक वृष्य मथि च न न चि नु य ३४ प ५
पे त्व वे उ प आ रि ना २ पंचामर पंचवन नः पंचोषधिः पंचवह्निनी ॥ ॐ ॥
जा जो अ क्र न इ वो कू २३ सहि ना न जा चार्य मनु न्या मा २ जा कि नी चा मा ख ३४ चा हा
चू पि शी वी च वी च ३४ च सं यु क्ता ॥ ॐ ॥ म क रु च च च श क ल आ र्च न नः अ रि
मं रु मू ख रु ल दा रु क हा न मो हं २ प्र उ अ ख श म ३ ला का च ह्ना न रु क च वा ह
ॐ ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ जा ग व सं नः ल ल न चा ग ॥ इ र्ज मा न ना
च ॥ कं रु नी ल हां ज पंच ह्ना न रु ल वाः कं का ल सं क्र प वी ज म त्प न्ना १ नि वा सि

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

न म हा का ल रु व मा म की म च सं द जी न व जी रु ना ॥ न मा मि द वो वा च शी ल मीः
व जा न्म रु ष क अ म ना द क २ आ लि ट प द (अ प्र रु धि मा स न स्थि नः म क मू ख डि
न य न अ च श व र्ण २ अ र द ध वा ह्ना चि ना द कः क व वा च ध च क्र प द्वि ती य क ल २
पा ठा क ठा ख इ चः ध र ग ज य ३४ व च द क प्र थ म स र्व अ प उ र्व उं ज रु ट क ध न
व कु वं ध ख द्वां ग क म ३४ ल २ डि व म रु द्र च व कु वा न ग न या नि न द न क मी रु च २
हं ह हा जीं ह का व ह च न व र्णः रु क अ म ना का च ला व य नि २ न व क च श म य रु षा
मे ज वा च शी च न मा य व कु न्द्र न धा धा य न्क ॥ ॐ ॥ ॥ ॥

नीलवर्ध

५

योगवर्ध

जग ॥ **॥ जगन्नाथ ॥** नीलवर्ध वाचशीदवी चकीक ३५ लकाशे का पाचकमख
 लरुषिना २ नमामि २ दवी श्रीमामकी सुमान सरुकि संधु जिना २ स्वस्व वीजा
 कवे समुत्पन्ना नवजीरुन सुन्दरी २ पंचकंठ अमरु पञ्च जिनखदपा सुवा
 सुवन नववीन्दगी २ ^{नपुंजि} जलम २ हुक्क पायि धय अ २ अनरु प्रमिदि मज्जि मिदि
 ॥ **ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ जगन्नाथ ॥** माल इजमान ॥ ॥
 पीनवर्ध मामकी दवी वि धव्यापिना अमरु पानल चूपमान च शदवी नव
 जीरुन रैला कः सुव सुन्दरी स्वस्व वीजा कवे समुत्पन्ना ॥ चकीक ३५ लकः

शिवा चक्र मखला चक्र अग उविरुषिना ॥ नमामि श्री वाचशीदवी शुच
 धवी २ पूज्यामि मना वाहिना सेहु च चय अ य अ मामिरु क्का अन
 रुचो सादि संपद ॥ **ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥**
 जोगनाटक ॥ मालमा ० ॥ चक्र वर्ध हुयलायन सुन्दरी अरुद ठा रुक
 रुलन रुकि चय ॥ हुक्क दवी वाचशी मामकी दवी २ जगन प्रभा दील म
 यने सुलगा ॥ **ॐ ॥** आगम वद पूजा श वणा श २ योग धर्म दि को
 गुरु पद ॥ **ॐ ॥** पंचवद पंच स्वरूप संतुक् २ सहस्र योगिनी

चक्रवर्ध ५

विष्णुवन्दन

येया हवव नु हवव ॥ ॐ ॥ सुदु च च अशिलंगन धिया २ रुनकि
वाक वज्र मलान सुच पिशी ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥
मग केरु ॥ मालख दं काले ॥ हविम वरुं छिनय श सुन्द जी नव जोरु आ जाव
न ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ सुक देवी मामकी वायु शीदवी ॥ अष्टाद वज्रु आरु लननुः
कि येश ॥ पंच बुद्ध स्वयं पाः सुक जागिनी ध्वजी ॥ ॐ ॥ हकाय श हचन व
श ॥ हाकाय गन्धना गने २ हां काय वीर्य हमाच ॥ अमना काय नु लाव धन ॥ ॐ
सुदु च च अशिलंगन धिया २ रुनकि सिद्धि वज्र वज्रा वायु गीना ॥

विष्णुवन्दन

॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ वागगन्ध वरुं वी ॥ माल मप ॥ ॥
सुक दहने पंचकान स्वयं प २ पंचमिया वसु पंचकालि पूजिया ॥ ॐ ॥
सुक देव वलि जाया ॥ छिनुवन थीन २ वीच मे वा पक समयानन्द ॥ ॐ ॥
वीच वीच ध्वज समयानन्द २ कनक जा वरुं हृदयानन्द ॥ ॐ ॥
पंच बुद्ध ^{पञ्चकान} रूप २ देवा सुवन च प्र मोदि न हृदया ॥ ॐ ॥
ॐ आ ॥ हं खे ऊं आ धन कवि न २ उम चू घष्ठा धनि विप्रमानः
॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

जागपप्रज्जलि ॥ गालमा ० ॥ पञ्चमहापाठसमयवाचीउवस्थान २ दवादिग
दभावलआचोविधा २ समयाज्ञानन्दरुवनिहायि ॥ ॐ ॥ वीजवीजव
चवायिपानः मश्लमाहनिविधकलियाकालचक्र २ दवकुमायविधकलिया
यायागयागिनी ॥ नहंकाचावलिदानदेवी २ दानपानियाविघ्ननिवालय ॥ मे
थीसंवयमाभमंजियाविधजननी २ समयाज्ञानन्दरुवनिहायि ॥
॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ जागेनाटक ॥ गालमर्जमान ॥ हानम
श्लमाभमामकीदेवी २ आलिकालिद्वयचापयिहचूवे ॥ नमामि २ थीमा

वंतिः

मकीदेवी थीठिउवननाभा ॥ ॐ ॥ संपूर्ण अमरकृष्ण जगन्नाथान ॥
॥ ॐ ॥ चक्रवर्षचक्रवर्षशीशिलाचनाविधकलिभज्ज्वलचक्रजगन्नाथ
॥ ॐ ॥ डाकिनीनामाखशजाराचपिथोः चक्रदेवीकीदंकिविला ॥
॥ ॐ ॥ हृषिकषट्मडाहृषिसंवीज ॥ ॐ ॥ रुनयिअनूपमवकुमाम
कीदासा ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ गंधाजहंयनिजाग ॥ उर्जमाननाथ
नमः ॥ आकाशअचक्रवर्षः स्वच्छमिसत्वउचाचमच ॥ ॐ ॥ ननाहं
ननाहंननानहं धवनसुअंविनीदहधच ॥ सजदसुआदियकाचथच ॥

विष्णु २

ॐ ॥ हे दआलिंगश याग धनः वज्रघट्ट मडा लय मूर्ति ॥ ॐ ॥
मायाविद हजीन ऊगुः साहय वज्रसत्त्व पञ्चम ध्वज ॥ ॐ ॥
मधुमनवाग ॥ इजमान माय ॥ ॥ विचक्र चवि विमिश्र लमाज स्थिति आः
नन्द मूर्ति धवा २ वज्रवाचा ही आलिंगश सम्पन्नाना च विमिश्र कला ॥ नना हू
हू नना हू हू नना नन हू हू हू ॥ नीलवर्ण चतुर्वक्त्र प्रमिस्र खनिनः पञ्चगुण
आनन्द मूर्ति धवा ॥ विष्णु वज्र ऊर्ध्व चतुर्भुज मकूट धवाः हाव आरुचय त
पिना ॥ वज्रघट्ट गजवर्म उमच खट्वाग धज वीरमानन्द मूर्ति धवा ॥ कचः

विष्णु २

निकपाल पञ्च गु पा अ धनः विष्णु लव कृष्ण धवा ॥ दिगं विदिगं का कासा
दि जमदादिया ॥ सहजानन्द मूर्ति धवा नमामि २ श्रीचक्र संवत्सु च
वच श आ जा धिया ॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
जागसु प्रमिस्र नाटक ॥ नाल चक्र मय ॥ हिदल संचा च्चो दिन कच मश्ल च
जिक विवने जननी २ चक्र कर्ण उच विमय न मोच वरुण गश छदनी ॥ देवी
कर्ण कपाल धवा ॥ ॐ ॥ हृषिक नच विम माला २ कमल कूल अ इयिना
चवा ऊयि ना चयि सहज मूर्ति धवा ॥ ॐ ॥ चोक्र विम कर्ण केशुल कश्चि

क०॥ २ ॥ हा० ॥ वाचक को० ॥ या उ० भ० खलु च० ॥ रा० ना० प० च० रूप० श्री॥ ॥ ध्रु० ॥ ह० व०
पद० पान० वं० न० ज० ध० ज० न० ॥ रा० हि० नी० क० न० के० जा० या० ॥ हा० वा० रा० व० वि० वर्जि० न० अ० न० न० ज०
सि० द्वि० प्र० भा० क० य० श्री० ॥ प्र० अ० मा० मि० श्री० व० ज० या० गि० नी० ॥ ॥ ध्रु० ॥ ॥ ॥ ॥
जा० ग० मा० न० न० ॥ ना० न० मा० ० ॥ ॥ दि० इ० उ० उ० क० मू० ख० पी० न० व० द० नी० ॥ न० ग० श० म० कू० ट० क० ॥
हि० न० य० श्री० ॥ न० मा० मि० श्री० ने० जा० त्मा० द० वी० जि० उ० व० न० ज० न० नी० ॥ ॥ ध्रु० ॥ वि० न० व० न०
व्या० पि० नी० जि० न० क० न० दा० य० श्री० ॥ द० हि० न० क० ज० नि० व० ज० ॥ च० लु० मा० ज० म० र्द० नी० ॥ २ ॥ वा० म०
क० जा० ट० क० वि० जा० सि० न० द० ध० न० ॥ प्र० अ० मा० मि० ने० जा० त्मा० द० वी० सृ० ज० न० ज० पू० जि० ना० ॥ २ ॥ सु० क० ल०

मृद्विमृद्विदोहममाना ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नागकद्रु ॥ मालमा ॥ ॥ अयं वस्त्रलिदवीचूवदवीधन ॥ सयचसूत्रासूत्र
 वान्दकवच ॥ नरुगवनिपादकमलनेहिमृद्वि न नायचचमूनकाया. होउमवचन.
 आरुचअविरुषिना. नायचघ ॥ उवाचा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 सिमिन्दुवधाचिकंजुनयना ॥ ककुचिकर्पचरुनायिका म्वजा ॥ ५ ॥
 कार्ककपालधाचिमू ॥ मालारुषिना. सुन्धखडागकपालधाचिका ॥ ५ ॥
 रुनायसूत्रनवकुवाडलिदा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नागकंद ॥ मालमा ० ॥ ॥ जयं वेंडुलिदवीचूवदवीधन ॥ सयचंसूचासूच
 वान्द नवच ॥ न रुगवनिपादकमलनहि मठि न नापूचच ॥ मून काया होउमवचन
 आरुचअविरुषिना नापूचघ ॥ उपाचा २ जीशि २ गिनय रुनयन न ना ॥ सिचः
 सिमिन्द्रवाचिकं जनुनयना २ ककुचि कपूच रुनायिना म्वजा ॥ ५२ ॥
 कर्क कपालवाचिमू २ मालारुषिना ॥ सुत्थखडांगकपालवाचिना ॥ ५३ ॥
 रुनायिसूचनवकुवाडुलिदा ॥ २ वी वज्रयोगिशोवचदप्रसाद ॥ ५४ ॥

महानसमयवक्र

नीलकण्ठ १३

चागपयंजलि ॥ मालमा ० ॥ मथल समय चक्र मथल संपूर्ण ॥ २ दाद भुजु
 चउचावयन ॥ ॐ ॥ जाननु कवथाः श्रीसुवच योगिनो २ श्रीयावहुला
 देवी अवनायुथी ॥ जकिनी जामाख २ बाहादूपेशो २ चापि माय चउ चापियो
 च ॥ कायवाकचिह्न विमिडुवन २ दानपानिया अरु अवनायुथी या यागया
 गिनी मवि या समवसंताव २ अष्ट भान श्रीरुचवजाया ॥ ॐ ॥
 चागक ॥ मालखदकाय ॥ ॥ नीलकण्ठ काय प्रकालिकिच २ उर्ध्वपिंगल
 क न श्री हवजुजाया ॥ जगन्मा कंकाय श्रीनेवात्मा देवी ॥ नीलवर्ण देवी कजोम

कपालभावी ॥ ॐ ॥ काका विजरी कजालिगधममाधि २ पाउ भुजु का कजाटक
 धिया ॥ ॐ ॥ ललाविरुषिग षट् मूडारुच २ व्याघ्र चर्मपचहिननजाभि
 यमाला ॥ ॐ ॥ बुद्धो महे श्वचना जाय शरु २ चापयि चउ चापश च
 रुमाचमईना ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥
 चागक ॥ मालखदकाय ॥ ॥ अर्वागिनि हिनाः वामजानसर्व स्वज्ञ
 किचथा मालसंतासाः चागदपमा हवदिजपा थाः किडुवनजाया अचलवीह
 जा ॥ ॐ ॥ नेमांमि श्रीच २ महाजोषम जानमसू हनिछुदिमा ॥ अग्निहीच
 विष्णुनाथि ॥ चापिग विष्णुविक्रमसंताकोमजा ॥ चागमसू रानेहृदिगा ॥

अष्टविधि ११

भा उग्र पत्र उा दे द्वा कवाया विदुः कवि भा १ पि उि व स्र व जा क क व न य ना वे चि
 सं शा सा जा ख ह्वा य भा ॥ मा भ व मा या कृ व न व व क्काः चू डो पि आ चा पा न्द रु च
 न्ना स म ज स मा या या ग वि भा रा ॥ न न य चा गा सु मा हि न द हा ॥ अ ल्हा रु च आ प
 क्कालि न मो लि क कृ व नो ए च चू ड म न द या ह्वा व न न य ना ग व दि न न व य आ
 जा य ह्वा म न अ न ल नी या ॥ ३६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 वा म द्वा या ग मा य म न ॥ क म लो वि भा रा कालि न इ डा म न कृ म ॥ पि
 य व ठ्ठा स म द हा च रु च व द न क व ल य द्वा म न न न य ना सि ना ॥ ३७ ॥

नमामि श्री श्री महामंरु श्री सकल शिवाय सुमगुच ॥ कुमनिद हन कानवच
 यदः सर्व काननिधिसागवा ॥ प्रथम कच इय धादिन वजु यथ मडा मापिंग
 धाजाजिनो २ दिनीय कृणधन नीय कानरुध चरुपेखन सम कचधवा
 ॥ उरुय कुजपा धा उवनधम चापच रुधे वामधन पुरुका ॥ प्रलम कटमि
 ल प्र कालिन किलिप मधरु जचिववा ॥ निर्वादि ब्रदि हाथि निर्मिन रुनिना
 सर्व काननिधिरुव यदागा ॥ उरु धाच धाच मार्गन पच गाद्य वजु रु
 जमनि ॥ धर ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

उदित कुवन १५

जाग पद्य जलि ॥ नालमा ० ॥ ॥ उदित कुवन क मला मन कि ज अ ललि
 न पवन दान अहा ॥ निर्मल रुदय कच धा मय नाथा २ दहिम अरुय प्र
 दाना ॥ धर ॥ रुद्र देव रुगा रुगा धाच धा ॥ रुद्रुवन व्यापिन जगन उध
 प्रिया २ यशमामि वृगमला क धा ॥ कनक चलम शिहा जीव रुषिनः कनक
 सुखव रुधा ॥ वाम कच धा वचद आरुय धाः सहजानन्द मय नि २ सचनच
 येक किनच गंश पूजिका ॥ ललाट वच धा सिलंगन धा प्रिया ॥ निमिज धाच
 धा मा क प्रदानाः दर्शन पाप दूख हय धा ॥ चक्रवर्ध मूरवनयन सुलाच

ना सर्वलक्षणं संपूर्णं च लक्षणं चिन्तयन्तु आचारं कथं वा मन्त्रं मन्त्रं लु
 वन विजयि ॥ ५२ ॥ ॥ जगन्माला ॥ नालमा ० ॥ ॥
 चक्रवदनं चक्रमुखं चिन्तयन्तु आचारं कथं वा मन्त्रं मन्त्रं लु
 ॥ ५२ ॥ नमामि श्री भीममन पद्ममन्त्रं ॥ वा मन्त्रं जगत्पद्मं वा मन्त्रं पद्मं
 लोय जगत्पद्मं वा मन्त्रं जगत्पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं
 देवी ॥ अर्धं लोय पद्मं वा मन्त्रं जगत्पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं
 ॥ लोय लोय पद्मं वा मन्त्रं जगत्पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं

चार्य ॥ मन्त्रं लोय पद्मं वा मन्त्रं जगत्पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं
 लोय लोय पद्मं वा मन्त्रं जगत्पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं
 गजमुखं चिन्तयन्तु आचारं कथं वा मन्त्रं मन्त्रं लु
 मन्त्रं जगत्पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं
 यादयः मायिमादयः विदयः २ मायिमादयः विदयः २ मायिमादयः विदयः २
 ४ खना सीमा २ पद्मं लोय पद्मं वा मन्त्रं जगत्पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं
 धनं खना सीमा २ पद्मं लोय पद्मं वा मन्त्रं जगत्पद्मं वा मन्त्रं पद्मं वा मन्त्रं पद्मं

गजाङ्गन २१

य शुकमंथि मंथि ना २ लम्बादव लम्बादव आ ल पायलमिमिमि मिवाजंनं
चला मवध न च लामयि ना मपिक मख अ निसुद जी दी मा दत्वा रुक्म सुखदा
ना ने मा मुन मा मु श्री ग अ ध्व जा ॥ ध्रु ॥ ॥ ॥ ॥
पाग रे च वि ॥ नाल इज मान ॥ गजाजिन उर्द्ध हा ल ध वि या कमल कूलि अजंग
वा जा २ उ म च क च नि घ ध्व रि भूल वाम ख दा ग क पाल च व ह ॥ ध्रु ॥ श्री सं व
पा शं यं वा ङ लिया रुक्म जाम्बवा च ल ह २ मा व यि च वा प यि या लि च मा या सा सु
रु अ व ल ली ना पा अ प्र व क मू ड वा द ठ हा य ध वि या उ न चो धि च मा ला श वि ध्व

वामरवर्ष २१

कूलि अजर्द्ध च नु क टा य न व्या द्य चर्म षट् मू डा ॥ आली उ य न्पा रे च व चा
पा यि च ध्व च कालि जा रि दिन मू डा २ नील लो हि न क न कां बू ज च उ म ख अ
नि री ष आ च व ह २ छ रि सं वी च ध्व च ना य क रि मि च क म हा वी चा ॥ क च्च अ
सं वा ग वी च वी च ध्व च कुं ज यि स य च सं सा च व ह ॥ ध्रु ॥ ॥ ॥
वला लि च रा ग ॥ जी ट नाल ॥ वा म ख र्प च द हि न क च नि पा य ल ना प्र च मू ड
माल रु पि ना ॥ ध्रु ॥ ना च यि न क मा नि वं जु था गि नी ॥ मि मि न रु द वी
छि उ व न य वि ल ॥ ध्रु ॥ सु ल सु क म ना दे वी नी ल ऊ न दे वी अ न्य पा रु द

मध्यमम् २३

शिवसा ॥ हननिथी एरुपमिहर्षिममनसा ॥ ॐ ॥ ॥
जागरेचवी ॥ मालमप ॥ ॥ मध्यमम् महामयिकनकजाजिनः पूर्वविदहजलः
जाम्बादीप २ अपजगतावजीउरुचकूचुवनपंचवर्ष पंचजिनव्यापियाध ॥
नमपंचवूद २ विश्वश्रीजिनविश्वहरविश्वरूपपंचमूर्ति ॥ अष्टदीपानलवह
निकजिनमानसाहचरु रुयमिमिचघचघाचचूप ॥ जाम्बवदनसुयाउपदीप जाउ
पदीपपविजानुदीन स्वसनजाउपदीप चउविदिगजुवन नाउपदीप श्रीख
शपच ॥ द्विचदनचपाचियनचचधिययाचिय सुप्रअष्टदलचंवियाच ॥

अष्टमम् २७

अवलजाउदचियसायकंचकाः मधिकपनिधिनिरिलवदयानि ॥ गुचचयथ
हिरुलमरुगतिपाचि रावनाः नचकूरुमउरुलसरुलीप्रजा २ प्रभवपाचि रा
चाधि सुप्रपविप्रोचिना रुवजलनिधिसकलसुरुहन ॥ ॥
जागललिन ॥ मालमप ॥ ॥ अनुरुच नथमा वंकाजारावचलसुप्रसंलाधिमः
ज्ञानामुनसयचन्दामरुचसवाधिरुलदायकं सर्वजिनव्यापिन सरुजकलसंजग
नेमल आधिन अन्यकचु अ रुवसंसाजनासनविचकूचूप ॥ वजापचमानुमयग
धाम्बसंप्रटं सखसंस्थापिपंचपीयूष २ रुंकाचमंडपूष्य अश्वद्वनवजसंस्थाः

पिताविपाककलमं ॥ घटमस्यनवनकचपराव आरुप्यमशकिनीः
 जलरूपं २ मटिमिसाक्षयशदवगाचकज्ञानसत्त्वमानिर्मयद्विजकिचयं ॥
 ॥ पाद्यादिआचमनदानपूजसूचयसमयसत्त्वप्रवर्णिगविमईकल
 सं २ महाभागडवीहूय वाधिविचरूपसमयसत्त्वज्ञानचक्रकीलनं ॥ ५ ॥
 ॥ ॥ गंधाचरुविवाग ॥ कटिमाव ॥ ॥ ॐ आ १ हू हू
 हू अंकस्वाहा मंगविशेषउवाचपूजापूजिगपूजसूहाव कलस्वरूपरुवगु
 च ॥ खखरवाहिनअलवल्लिपूजापद्यघघाटय २ विघ्नहन् पंचमियाचम

पंचसहस्रिचः पंचज्ञानसर्ववालना ॥ सर्वजकवाकसंरुगपनपिआवअपस
 माचय ॥ जकजकिनीद्वयीअष्टवलिगकगकलुच ॥ समया
 चक्रनुमाकसिद्धिचः सर्वसुखसंपदआकिज ॥ ऊथेवऊथेवऊऊथपिक्व ॥
 जिघंथमाहिकारुवंगुच ॥ दानपनि सर्वकार्यसिद्धिच मनाचपसर्वसुख
 पदआकिज ॥ आजससाचनपागगउवन स्वाहायंकाचरुवगुच ॥ ५ ॥
 ॥ ॥ गण्डगिचिवाग ॥ चक्रनचिमाच ॥ चक्र ॥
 चकीकूडलकाठिचाचकमखलरूपेन गीवचूडनचिचमाचा २ सचचकी

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

अवमवासधनधवा ॥ कुचरुगवक्त्रकपालधवा ॥ ॥ वरुधंठविषयवायन शुद्धात्रि पदासग
 क्रोवशृगाया ॥ ॥ पुडुमवजुपदमाधव रगवगी ॥ पावन्तु न्रीपूधपदागा ॥ ॥ रावन्तु २
 सर्ववन्धमाचय वजुगगउगायन ॥ ॥ विविधमचवय विद्यविनासन मधिसिधिवजपदागा ॥
 ॥ सत्तात्रचवक्ष सिधंगनधात्रिया ॥ आदिवृधपयमध्वया ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 जागचामकवि गालमा ॥ ॥ सुवर्नपरावा सुचरुखनाच ॥ निचंनिचुर्ध वपुरवंदंति ॥ कोने
 पुदक्ष तनूयेसुकेपि ॥ मान्यो ध्वगालं चामकविपयस ॥ ॥ म्यदनिउलज्जुनि वायुमधुल उयम-
 स्थिगशी शुभ्यत्र ॥ ॥ नानाचग्रमय उलिगउम्कि ग ॥ गजसस्थिगशी शुभ्यत्र ॥ ॥ नमामि २ श्री
 गुपुतउसत्त अनगगुधनिधि आगया श्विध्वना ० विध्वव्यापिग गुपुनिगवन संपूजिगा ॥ ॥ आकास

वर्धमूरव नयनसुविशाय वजुयन्धवात्रिगा ॥ गिलक शुवर्ध सुध्वरास्कय चत्तमकू गसिलधवा ॥ ॥
 चत्तकधुल सज्जिचिवय सत्तयर्जक सस्थिगा ॥ चतुर्वादिपदिगठजत्तादि चत्तमधुलसम्पूध ॥ ॥
 मधिपमादिग गठोनिविशायवद ॥ गुपुनिचंजनसिधधया २ मधिसिधिवजपदागा सर्वज्ञजिनका
 नरवपदागा ॥ ॥ ॥ ॥ जागवसन्न गालदुर्जमान ॥ अष्टदयसुवाउ उल्लवयकासिग ॥ श्रीसा
 क मूनिवजध्वानचाचना ॥ दहिगशीवजुयानि वामकमल्लपानि नमा श्रीधर्मजाग महामूनि ॥ ॥ दहि
 नखिस्त्रिधयवामकू धडाकापाग ॥ वाचिं गुचिं वजधात्रि रत्तनव्यापिगा ॥ ॥ कात्रन्यमानस निर्मल
 कीदय ॥ सत्तउधायन अतयपदागा ॥ ॥ जयम २ सगगवलस्यविग गुक्त शुभयक्ष माऊपदागा ॥ ॥ ॥